Chapter- 2

स्वर्णकाक:

MIND MAP

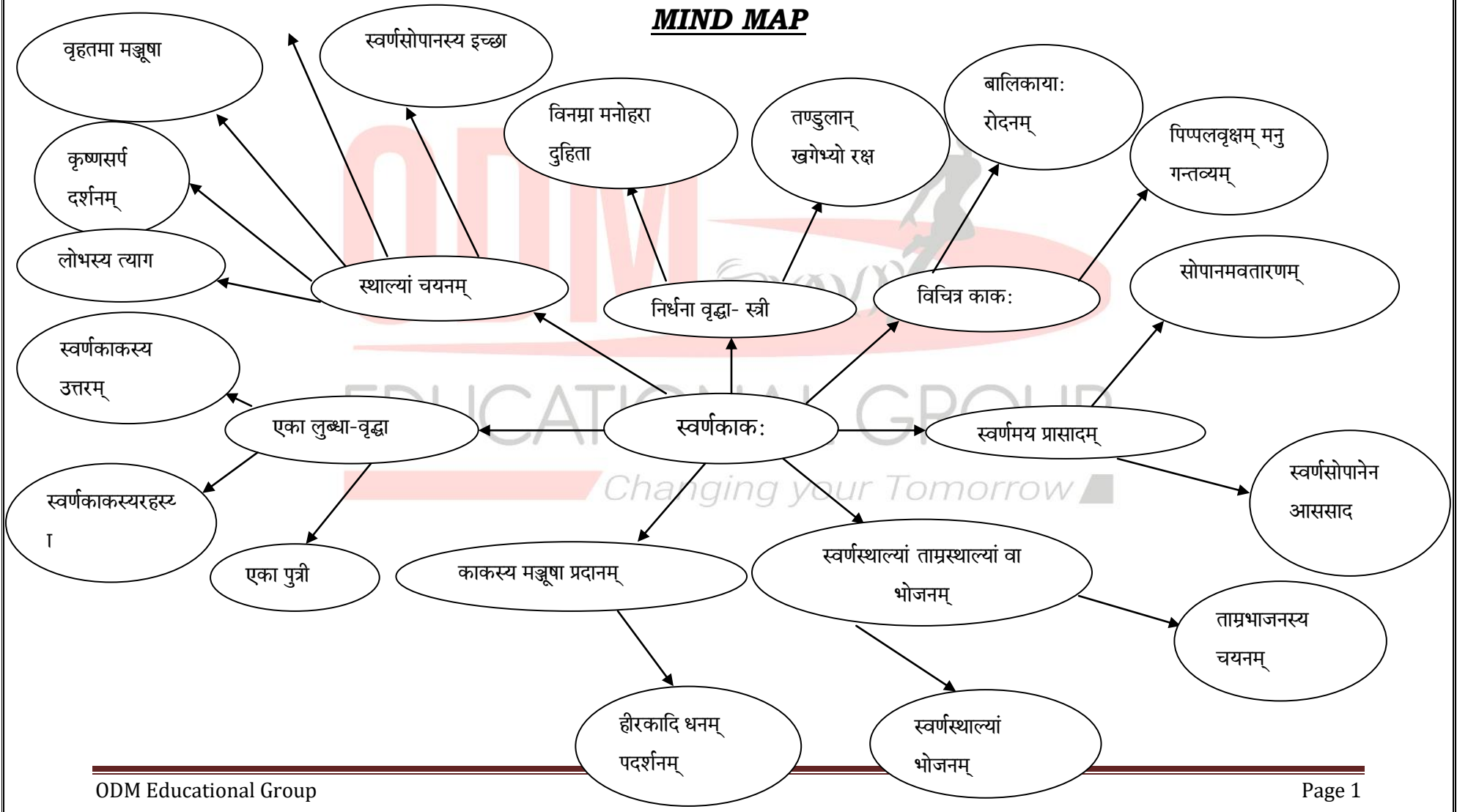

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

प्रस्तुत नाट्यांश **सोमदेवरचित कथासरितसागर** के सप्तम लवक (अध्याय) पर आधारित है। यहाँ तपोबल से विद्या पाने के लिये प्रयत्नशील तपोदत्त नामक एक बालक की कथा का वर्णन है। उसके समुचित मार्गदर्शन के लिये वेष बदल कर इन्द्र उसके पास आते हैं और पास ही गङ्गा में बालू से सेतु निर्माण के कार्य में लग जाते हैं। उन्हे ऐसा करते देख रपोदत्त उसका उपहास करता हुआ कहता है – अरे! किसलिए गङ्गा के जल में व्यर्थ ही बालू से पुल वनाने का प्रयत्न कर रहे हो? इन्द्र उन्हे उत्तर देते हैं - यदि पढने, सुनने और अक्षरों की लिपि के अभ्यास के विना तुम विद्या पा सकते हो तो बालू से पुल बनाना भी सम्भव है। इन्द्र के अभिप्राय को जानकर तपोदत्त तपस्या करना छोडकर गुरुजनों के मार्गदर्शन में विद्या का ठीक-ठीक अभ्यास करने के लिये गुरुकुल चला जाता है।

कथासरित्सागर अनेक कथाओं का महासमुद्र है। इस ग्रन्थ में अठारह लम्बक हैं। मूल कथा के पुष्टि के लिये अनेक उपकथाएँ वर्णितन की गई हैं। प्रस्तुत कथा रत्नप्रभा नामक लम्बक से संकलित की गई है।ज्ञानप्राप्ति केवल तपस्या से नहीं, बल्कि गुरु के समीप जाकर अधययनादि कार्यों के करने से होती है। यही इस कथा का सार है।

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your Tomorrow